मसीह में बालकों के लिए प्रौढ़ परामर्श (9:23-30; 22:17-21)

निकुदेमुस से बात करते हुए यीशु ने मनपरिवर्तन की प्रक्रिया की तुलना जन्म से की थी। उसने इस यहूदी शासक को बताया, ''यदि कोई नए सिरे से न जन्मे तो परमेश्वर का राज्य देख नहीं सकता'' (यूहन्ना 3:3; तु. यूहन्ना 3:5; 1 पतरस 1:22, 23)। नया नियम नये मसीहियों को ''मसीह में *बालक*'' कहता है (1 कुरिन्थियों 3:1; इब्रानियों 5:13 भी देखिए)।[1] मसीह में बालक के रूप में नये मसीहियों को नवजात शिशुओं पर आने वाले संकटों तथा आनन्द से होकर गुजरना होता है।

पिछले पाठ में, हमने तरसुस के शाऊल (पौलुस प्रेरित के नाम से प्रसिद्ध) के ''नये जन्म की प्रक्रिया'' को देखा था।[2] इस पाठ में एक मसीही के रूप में शाऊल के आरम्भिक दिनों पर ध्यान देते हुए हम प्रेरितों 9 का अपना अध्ययन जारी रखेंगे।[3] इस वृत्तांत से हम ''मसीह में बालकों के लिए'' कुछ ''प्रौढ़'' परामर्श लेंगे।

अपने परिवार की प्रशंसा कीजिए (9:19, 20, 26-28, 30)

एक डॉक्टर ने एक बार मुझे बताया कि छोटे बच्चों का मरना स्वाभाविक है। कुछ नवजात जीवों के विपरीत, इन्सानी बच्चों पर लगातार ध्यान देना आवश्यक है। उस निरन्तर सम्भाल के लिए परमेश्वर ने परिवार उपलब्ध कराया है। *नये मसीहियों* की मृत्यु-दर शिशुओं की मृत्यु दर से कहीं अधिक है। मसीह में बालकों को शक्ति देने और उत्साहित करने के लिए परमेश्वर ने एक और परिवार दिया है, जिसे कलीसिया कहते हैं।[4] पौलुस ने ''परमेश्वर का घर, जो जीवते परमेश्वर की कलीसिया है'' की बात की (1 तीमुथियुस 3:15)। अंग्रेज़ी के एक अनुवाद में ''परमेश्वर का घर'' के स्थान पर, ''परमेश्वर का *परिवार*'' है।[5]

मैं उन बच्चों को जानता हूं जो अपने परिवार की प्रशंसा नहीं करते।[6] दुर्भाग्य से, मैं ऐसे मसीही लोगों को भी जानता हूं जो परमेश्वर द्वारा दिए गए आत्मिक परिवार की पूरी तरह से प्रशंसा नहीं करते। नये मसीहियों को कलीसिया की प्रशंसा करने के साथ-साथ प्रभु द्वारा किए गए प्रबन्ध का भी लाभ उठाना चाहिए।

जो लोग कलीसिया के महत्व को नहीं समझते, उन्हें शाऊल के मनपरिवर्तन को

और ध्यान से समझना चाहिए। उस सताने वाले को मार्ग में दर्शन देकर यीशु ने कहा, ''हे शाऊल, हे शाऊल, तू *मुझे* क्यों सताता है?'' (9:4)। शाऊल ने व्यक्तिगत रूप से यीशु को नहीं सताया था; बल्कि इस जवान ने यीशु के *चेलों* को सताया था (8:1-3)। जब कोई यीशु के चेलों के साथ दुर्व्यवहार करता है, तो वह यीशु के साथ ही दुर्व्यवहार कर रहा होता है। मैं विचार को थोड़ा आगे ले जाता हूं। शाऊल ने विशेष तौर पर *कलीसिया* को सताया। प्रेरितों 8 में हम पढ़ते हैं, ''उसी दिन यरूशलेम की *कलीसिया* पर उपद्रव होने लगा ... शाऊल *कलीसिया* को उजाड़ रहा था'' (पद 1, 3)। अपनी पत्रियों में, पौलुस ने ज़ोर देकर कहा है कि उसने कलीसिया को सताया था। ''मैंने ... कलीसिया को सताया था'' (1 कुरिन्थियों 15:9); ''मैं परमेश्वर की कलीसिया को बहुत ही सताता और नाश करता था'' (गलतियों 1:13)। फिलिप्पियों 3:6 में पौलुस ने स्वयं को ''कलीसिया का सताने वाला'' कहा। परन्तु, यीशु ने कहा कि शाऊल *उसे* सता रहा था। सारांश यह है कि कोई यीशु को उसकी कलीसिया से अलग नहीं कर सकता![7]

जब शाऊल का बपतिस्मा हुआ, तो प्रभु द्वारा उसे कलीसिया में मिलाया गया[8] और उसी समय उसे दमिश्क की मण्डली में ग्रहण कर लिया गया। (मैं कल्पना कर सकता हूं कि उनमें से कई शाऊल के बपतिस्मे के समय वहां उपस्थित थे,[9] जब वह पानी से बाहर आया तो वे ''स्वागत है, भाई शाऊल!'' के साथ सलाम कहते हुए उससे हाथ मिला रहे थे।) हमें बताया गया है कि बपतिस्मे के बाद शाऊल ''कई दिनों तक उन चेलों के साथ रहा जो दमिश्क में थे'' (आयत 19)। फिर ''वह तुरन्त आराधनालयों में यीशु का प्रचार करने लगा'' (आयत 20क)। मसीह में इस बालक के प्रचार करने के *साहस* का एक कारण यह भी था कि मसीह में उसके नए भाइयों तथा बहनों ने उसे *उत्साहित* किया था! बाद में दमिश्क में, जब शाऊल के जीवन को ख़तरा था, तो उसका आत्मिक परिवार उसके बचाव के लिए आगे आया (आयत 25)।

भलाई के लिए दमिश्क छोड़ने के बाद शाऊल तत्काल यरूशलेम में लौट गया। यरूशलेम में वह चाहता था कि फिर प्रभु में अपने भाइयों तथा बहनों से घिरा रहे। हम पढ़ते हैं, ''यरूशलेम में पहुंचकर उसने चेलों के साथ *मिल* जाने का उपाय किया'' (आयत 26क)। अनुवादित यूनानी शब्द ''के साथ मिल जाने'' अथवा ''शामिल होने'' का अक्षरश: अर्थ है ''जुड़ना या चिपकना।''[10] शाऊल यरूशलेम की मण्डली की संगति का एक भाग बनना चाहता था। यह इतना आवश्यक था कि मूल भाषा के अनुसार वह चेलों में शामिल होने के लिए अपने आप को मिलाने का ''*यत्न* करता रहा'' है।

पहले, हम ज़ोर दे चुके हैं कि कोई भी प्रभु की कलीसिया में अपनी इच्छा से शामिल नहीं हो सकता, बल्कि प्रभु स्वयं ही किसी को कलीसिया में मिलाता है (2:41, 47)। तथापि, प्रभु की कलीसिया की विश्वव्यापी देह में मिलाए जाने के बाद, कोई भी स्वयं को एक स्थानीय *मण्डली* में ''शामिल कर'' सकता है (और चाहिए भी)। हर एक मसीही के लिए स्थानीय मण्डली का सक्रिय सदस्य होना आवश्यक है।[11] शाऊल भी मण्डली का सक्रिय सदस्य बनना चाहता था। जब दमिश्क में शाऊल का बपतिस्मा हुआ, तो वह

स्वत: ही वहां की स्थानीय मण्डली का एक भाग बन गया। जैसा कि साधारणतया किसी के बपतिस्मा लेने पर होता है।[12] जब वह यरूशलेम में आया, तो वह अपने आप ही उस मण्डली का भाग नहीं बन गया; बल्कि उसने उनकी संगति की इच्छा की, सो वह उनमें गिना जाने के लिए प्रयत्न करने लगा।

हम उस विश्वव्यापी कलीसिया के महत्व को देख चुके हैं, जिसके लिए यीशु मरा।[13] स्थानीय कलीसिया का भी महत्व है। वास्तव में, विश्वव्यापी कलीसिया की एकमात्र दृश्यमान और व्यवहार्य अभिव्यक्तियां स्थानीय मण्डलियां ही हैं। जब पौलुस ने अपनी पत्रियां लिखीं, तो उसने ''विश्वव्यापी कलीसिया'' को सम्बोधित नहीं किया; बल्कि उसने विशेष स्थानों में विशेष मण्डलियों को लिखा (1 कुरिन्थियों 1:2; 2 कुरिन्थियों 1:1; गलतियों 1:2; 1 थिस्सलुनीकियों 1:1; 2 थिस्सलुनीकियों 1:1)।

नये नियम में आम तौर पर स्थानीय मण्डली के महत्व पर ज़ोर दिया गया है। प्रकाशितवाक्य में यीशु की पहचान उसके रूप में की गई है जो ''सोने की सातों दीवटों में फिरता है'' जो कि आसिया की ''सात कलीसियाएं [मण्डलियां]'' हैं (प्रका. 2:1; 1:4, 20)। यदि हो सके तो हम में से हर एक को ऐल्डरशिप (प्राचीनों) की निगरानी में रहना चाहिए (इब्रानियों 13:7),[14] परन्तु ऐल्डरों की निगरानी केवल स्थानीय मण्डलियों तक ही सीमित होती है।[15] यदि हम स्थानीय मण्डली के सदस्य नहीं हैं तो हम ऐल्डरों की निगरानी में नहीं रह सकते।

एक स्थान से दूसरे स्थान को जाने पर आपको शाऊल जैसा बनना चाहिए अर्थात जितनी जल्दी हो सके प्रभु के लोगों[16] की विश्वासी मण्डली को ढूंढकर, उन्हें किसी न किसी[17] प्रकार बताइए कि आप मसीहियों के उस समूह में ''स्वयं को शामिल करना'' चाहते हैं!

यरूशलेम के मसीही पहले तो, पौलुस को स्वीकार करने से हिचकिचाते थे[18]; किन्तु जब बरनबास ने उसमें व्यक्तिगत दिलचस्पी ली और उसका समर्थन किया तो सभी ने उसे स्वीकार कर लिया (आयत 27)। फिर वह मसीही लोगों में बेरोक-टोक आ-जा सकता था (आयत 28) और उनकी संगति का आनन्द ले सकता था। बाद में जब उसे यरूशलेम से भागना था (जैसे वह दमिश्क से भागा था), तो फिर उसे बचाने वाले मसीह में उसके भाई ही थे (आयत 29, 30)।

शाऊल ने स्पष्टत: अपने आत्मिक परिवार अर्थात कलीसिया की प्रशंसा की। आशा है कि आप भी ऐसा ही करते हैं!

बात करना सीखें (9:20-22, 27-29; 26:20)

बच्चों को बोलना सीखना पड़ता है। कई बच्चे जल्दी सीख जाते हैं, कई थोड़ी देर से सीखते हैं। उनके पहला शब्द बोलने पर हमें कितनी उत्सुकता होती है! जब मैं देखता हूं कि शाऊल कितनी जल्दी ''बोलने'' लग पड़ा तो मुझे अपनी पहलौठी बेटी, सिन्थिया का स्मरण आता है। जब वह बहुत छोटी थी तो उन शब्दों को बोलने का प्रयास करती थी जो हम बोलते थे। उसे बोलना इतना अच्छा लगता था कि हमें कई बार बाहर के लोगों के

लिए उसकी बात की ''व्याख्या'' करनी पड़ती थी। हम कहते ''उसका मन बात करने को करता है। आखिर, उसका पिता एक प्रचारक है, और उसकी मां एक महिला है।''

''नया जन्म लेकर'' शाऊल उसी समय पूर्ण वाक्यों में यीशु के विषय में बोलने लगा। हम यह तो नहीं जानते कि सप्ताह के किस दिन उसका बपतिस्मा हुआ था, परन्तु अगले सब्त के दिन वह आराधनालय में उपस्थित था: ''वह तुरन्त आराधनालयों में यीशु का प्रचार करने लगा कि वह परमेश्वर का पुत्र है'' (9:20)। शाऊल को आराधनालय में देखकर वहां उपस्थित लोग उत्सुक तो हुए होंगे परन्तु चकित नहीं।[19] एक प्रसिद्ध यहूदी विद्वान जो जेलोतेस भी था, से मिलकर वे लोग अपने आपको गौरवान्वित मान रहे थे। जब शिक्षा देने का समय आया, तो संचालन करने वाले ने शाऊल के पास आकर कहा होगा ''भाई, यदि लोगों के उपदेश के लिए तुम्हारे मन में कोई बात हो तो कहो!'' (देखिए 13:15.) श्रोता नि:संदेह भाषण सुनने की आशा कर रहे थे कि कैसे मसीही लोग शुद्ध यहूदी विश्वास को नाश कर रहे थे। लेकिन, उन्हें यीशु पर प्रवचन मिला कि वह परमेश्वर का पुत्र है!

प्रेरितों की पुस्तक में यीशु का ''परमेश्वर के पुत्र'' के रूप में पहली बार प्रचार हुआ था।[20] यीशु ने शाऊल को दमिश्क के मार्ग पर[21] परमेश्वर के पुत्र के रूप में दर्शन दिया था। ''परमेश्वर का पुत्र'' शब्द इस प्रेरित के लेखों में मुख्य विषय बन गया।[22]

वहां उपस्थित लोग संदेश से ज्यादा संदेश देने वाले से हैरान थे। हम पढ़ते हैं, ''और सब सुनने वाले चकित होकर कहने लगे; क्या यह वही व्यक्ति नहीं है जो यरूशलेम में उन्हें जो इस नाम को लेते थे नाश करता था, और यहां भी इसीलिए आया था, कि उन्हें बान्धकर महायाजकों के पास ले जाए?'' (9:21)।

दिन बीतते गए और शाऊल ''यीशु के नाम से प्रचार'' करता रहा (9:27)। ''परन्तु शाऊल और भी सामर्थी होता गया, और इस बात का प्रमाण दे देकर कि मसीह यही है, दमिश्क के रहने वाले यहूदियों का मुंह बन्द करता रहा'' (9:22)। ''प्रमाण दे देकर'' मिश्रित यूनानी शब्द का अनुवाद है जिसका अक्षरश: अर्थ है ''एकत्र करना, एक होना, इकट्ठे मिलाना।'' पौलुस ने मसीह के हवाले देने के लिए पुराने नियम को उद्धृत किया और फिर इनको यीशु के जीवन के तथ्यों के साथ मिलाया।[23] इन दो स्रोतों को ''इकट्ठा जोड़ने'' से यह शक्तिशाली प्रमाण मिल गया कि यीशु ही मसीहा था!

शाऊल ने यीशु के मसीहा होने की घोषणा से बढ़कर काम किया। उसने अपने साथी यहूदियों को बताया कि उन्हें, उसी की तरह ही अपनी निष्ठा को बदलना ज़रूरी था! वह ''... दमिश्क के, ... रहने वालों को ... समझाता रहा कि *मन फिराओ* और परमेश्वर की ओर फिर कर मन फिराव के योग्य काम करो'' (26:20)।

दमिश्क में शाऊल के आरम्भिक दिनों ने उसकी सेवकाई के लिए उदाहरण प्रस्तुत कर दिया। यरूशलेम जाकर वह, ''निधड़क होकर प्रभु के नाम से प्रचार करता था और यूनानी भाषा बोलने वाले यहूदियों के साथ [उनके आराधनालयों में[24]] बातचीत और वाद-विवाद करता था'' (9:28, 29)। यह प्रेरित जहां भी जाता पहले आराधनालय में पहुंचा[25] और उसका संदेश यही होता कि ''यीशु ... परमेश्वर का पुत्र है'' (9:20; देखिए

1 कुरिन्थियों 2:2; गलतियों 6:14)।

प्रत्येक मसीही के लिए शाऊल का उदाहरण अनुकरणीय है। हम देखते हैं कि पहले, उसने *तुरन्त* बोलना आरम्भ किया। वास्तव में, वे उसे चुप नहीं करा सके! दूसरा, उसने बोलना वहीं से आरम्भ कर दिया *जहां वह था*। साधारणतया उन लोगों के साथ बात करना अति कठिन होता है जो हमें मसीही बनने से पहले जानते थे, परन्तु शाऊल ने उन्हीं से आरम्भ किया जो उसे अच्छी तरह जानते थे। तीसरा, उसने वह बताया *जो वह जानता था*। प्रचार आरम्भ करते समय हो सकता है कि उसको आत्मा की प्रेरणा मिली हो; या यह भी हो सकता है कि न मिली हो,[26] परन्तु उसके पास बताने के लिए एक कहानी थी! चौथा, उसकी कहानी का केन्द्र सदा यीशु मसीह ही होता था और यह कि यीशु ने उसके लिए क्या किया!

आइए निम्न प्रासंगिकताएं बनाएं: (1) यीशु के विषय में दूसरों को बताने के लिए हर एक मसीही को तुरन्त आरम्भ करना चाहिए। ''शान्त रहकर चेला अपना कर्त्तव्य नहीं निभाता'' (2) यीशु के बारे में बताने के लिए आज किसी मसीही को ''जहां वह है'' वहीं से आरम्भ करना चाहिए। जो जानते थे वे वैसे ही चकित हुए होंगे जैसे वे यहूदी, जिन्होंने शाऊल को प्रचार आरम्भ करते सुना था! (तु. 1 पतरस 4:4.) (3) हर एक मसीही को चाहिए कि जो वह जानता है, वह लोगों को भी बताए। हो सकता है कि उसे अधिक ज्ञान न हो, परन्तु वह यह तो जानता ही होगा कि वह क्या विश्वास करता है और मसीही बनने के लिए उसने क्या किया था। पहले, वह इतना बताए और बाद में और ज्यादा सीख सकता है। (4) हर एक मसीही को चाहिए कि वह अपने संदेश का केन्द्र यीशु को रखे।

प्राय: हम नए मसीहियों से बहुत कम अपेक्षा रखते हैं और जब वे हमारी अपेक्षाओं के अनुरूप जीवन बिताते हैं तो हमें आश्चर्य होता है! क्या हम छोटे बच्चों से अधिक अपेक्षा नहीं करते? हम अपेक्षा करते हैं कि वे बढ़ें, चलना और बोलना सीखें और उनके विकास के लिए जो कुछ भी आवश्यक होता है, हम करते हैं। आइए यीशु में नये जीवन को तुरन्त अभिव्यक्त करने के लिए नए मसीहियों के लिए जो कुछ भी कर सकते हैं, हम करें?

भोजन का आनन्द लें (9:22)

एक मुख्य सिद्धांत पर हमें ज़ोर देना चाहिए कि मसीह में हर एक बालक का *बढ़ना* ज़रूरी है। ''हमारे प्रभु, और उद्धारकर्ता यीशु मसीह के अनुग्रह और पहचान में बढ़ते जाओ'' (2 पतरस 3:18)। विकास चाहे धीमा हो अथवा तीव्र, वह इतना महत्वपूर्ण नहीं है जितना यह कि विकास हो रहा है। एक नवजात शिशु बड़ा न हो तो वह मर जाता है।

प्रेरितों 9:22 कहता है कि ''शाऊल और भी *सामर्थी होता गया* और ... यहूदियों के मुंह बन्द करता रहा।'' ''सामर्थी होता गया'' आयत 18 के साथ मेल खाता है, जहां स्पष्ट किया गया है कि शाऊल ने बपतिस्मा लेने के बाद, ''भोजन करके बल पाया।'' पहले, शाऊल के *शरीर* को और, फिर उसकी *आत्मा* को भी बल मिला। शाऊल का विरोध बढ़ने के साथ-साथ उसका बल बढ़ना भी आवश्यक था और यह बढ़ा भी।

लूका ने यह नहीं बताया कि शाऊल सामर्थी कैसे हुआ, परन्तु हम जानते हैं कि इस प्रेरित के बढ़ने की मुख्य बात यीशु के विषय में उसका *ज्ञान* था।[27] पतरस ने लिखा, ''नये जन्मे हुए बच्चों की नाईं निर्मल *आत्मिक* दूध की लालसा करो, ताकि उसके द्वारा उद्धार पाने के लिए *बढ़ते* जाओ'' (1 पतरस 2:2; इब्रानियों 5:12–14 भी देखिए)। शाऊल ने यीशु का ज्ञान दो प्रकार से पाया।

अति महत्वपूर्ण ढंग जिससे शाऊल को ज्ञान प्राप्त हुआ, वह था प्रभु से *सीधा प्रकाशन*। पौलुस ने बाद में लिखा:

> हे भाइयो, मैं तुम्हें जताए देता हूं, कि जो सुसमाचार मैंने सुनाया है, वह मनुष्य का सा नहीं। क्योंकि वह मुझे मनुष्य की ओर से नहीं पहुंचा, और न मुझे सिखाया गया, पर यीशु मसीह के प्रकाश से मिला। ... और न यरूशलेम को उन के पास गया जो मुझ से पहिले प्रेरित थे, पर तुरन्त अरब को चला गया (गलतियों 1:11, 12, 17)।[28]

दमिश्क के मार्ग पर, शाऊल को प्रकाश न मिला कि जो यीशु मुर्दों में से जी उठा है वही मसीह है और यह भी कि यीशु को उससे क्या अपेक्षा थी। हम नहीं जानते कि शाऊल को अपने शेष-विशेष प्रकाशन कब व कहां मिले। एक सम्भावना इन शब्दों में मिलती है कि वह ''तुरन्त अरब को चला गया'' (गलतियों 1:17)। अरब दमिश्क के पूर्व में एक विशाल उजाड़ क्षेत्र था जो पूर्व में फरात नदी और दक्षिण में लाल सागर तक फैला हुआ था।[29] अपनी आरम्भिक सेवकाई में शाऊल ने दमिश्क को छोड़ने और दमिश्क में लौटने से पहले के बीच का समय अरब में बिताया।[30] बहुत से टीकाकारों का मानना है कि यह मुख्यत: मनन करने के उद्देश्य से था (''आध्यात्मिक निर्जन स्थान''),[31] जबकि अन्य का विचार है कि यह मुख्यत: प्रचार के उद्देश्य के लिए था (जैसे उसने दमिश्क में किया था)। क्योंकि बाइबल यह नहीं बताती कि शाऊल अरब में क्यों गया और उसने वहां क्या किया, इसलिए हम इस बारे में निश्चित रूप से नहीं जानते। कम से कम यह सम्भव है कि उसे मिले अनेक ''दर्शनों और प्रकाशों'' में से कुछ ऐसे समय मिले जिनका उल्लेख उसने बाद में 2 कुरिन्थियों 12:1 में किया। शाऊल को प्रभु से प्रकाशन जहां भी और जब भी मिला हो, इसने उसके जीवन को यीशु की शिक्षा से भर दिया। बाद में उसने लिखा, ''क्योंकि यह बात मुझे *प्रभु से पहुंची,* और मैंने तुम्हें भी पहुंचा दी; कि प्रभु यीशु ने जिस रात वह पकड़वाया गया रोटी ली'' (1 कुरिन्थियों 11:23)।[32] मूल बारह प्रेरितों को यीशु ने पहले सिखाया और फिर वे उसके जी उठने के गवाह हुए (प्रेरितों 1:21, 22)। पौलुस का अनुभव इसके विपरीत था, वह पहले गवाह था और *फिर* उसे यीशु द्वारा सिखाया गया।[33]

दूसरा, पौलुस ने अपना ज्ञान दूसरों से सीखकर बढ़ाया। गलतियों के नाम पत्र लिखते हुए, उसने ज़ोर दिया कि वह तुरन्त प्रेरितों से मिलने नहीं गया, बल्कि ध्यान दिलाया, कि ''फिर तीन बरस के बाद [अर्थात अपने मनपरिवर्तन के तीन साल बाद] मैं कैफा [पतरस

का दूसरा नाम[34]] से भेंट करने के लिए यरूशलेम गया और उसके पास पन्द्रह दिन तक रहा'' (गलतियों 1:18)। क्या आप पतरस और शाऊल की संगति नहीं चाहेंगे जब उन्होंने अपने अनुभवों और यीशु से प्राप्त अपने ज्ञान को एक-दूसरे के साथ बांटा? मैं देख सकता हूं कि जब पतरस प्रभु के इन्कार की बात बता रहा था व शाऊल परमेश्वर के लोगों को सताने का स्मरण कर रहा था तो उनकी आंखों से आंसू टपक रहे थे।

यदि मसीह में एक बालक को मज़बूत होना है, तो उसे परमेश्वर के वचन का आहार लेना चाहिए। जो कुछ शाऊल को सीधे प्रकाशन तथा निजी जानकारी से दिया गया, वह सब *बाइबल* हमें उपलब्ध करवाती है। बाद में उसने तीमुथियुस को लिखा कि ''... पवित्र शास्त्र ... तुझे मसीह पर विश्वास करने से उद्धार प्राप्त करने के लिए बुद्धिमान बना सकता है'' (2 तीमुथियुस 3:15)। उसने वचन की तुलना एक औज़ार से की और जवान प्रचारक को चुनौती दी कि वह इसका अच्छी तरह इस्तेमाल करना सीख कर, ''ग्रहणयोग्य और ऐसा काम करने वाला ठहराने का प्रयत्न कर, जो लज्जित होने न पाए, और जो सत्य के वचन को ठीक रीति से काम में लाता हो'' (2 तीमुथियुस 2:15)।

नये मसीहियों के लिए कुछ सुझाव इससे अधिक महत्वपूर्ण हैं अर्थात यह कि वे अध्ययन करें और अध्ययन करें, वचन का अध्ययन करें! बिरीया के उन भले लोगों का अनुसरण करें जिन्होंने ''बड़ी लालसा से वचन ग्रहण किया, और प्रतिदिन पवित्र शास्त्रों में ढूंढते रहे कि ये बातें यों ही हैं, कि नहीं'' (प्रेरितों 17:11)। बाइबल का अध्ययन अपने आप करें। अध्ययन के लिए एक समय तय कर लें; अध्ययन के लिए आप योजना भी बना सकते हैं। और, सीखने के प्रत्येक अवसर का लाभ उठाएं। एक मसीही के रूप में, आप परमेश्वर के परिवार का एक भाग हैं। मसीह में अपने भाइयों तथा बहनों के साथ बाइबल क्लास और आराधना सभाओं में विश्वासपूर्वक जाएं, और उनके साथ अध्ययन करें। अपने आत्मिक भोजन का *आनन्द* लेना सीखें।

सारांश

आइए इस पाठ को आत्म-निरीक्षण के साथ समाप्त करते हैं। हम में से हर एक अपने आप से यह पूछे, ''एक मसीही के रूप में मैंने किस प्रकार की उन्नति की है?'' पौलुस ने उन मसीहियों को उदास करने वाले ये शब्द लिखे जिनका आत्मिक विकास उस प्रकार नहीं हुआ था जैसे होना चाहिए था: ''हे भाइयो, मैं तुम से इस रीति से बातें न कर सका, जैसे आत्मिक लोगों से; परन्तु जैसे ... उन से जो मसीह में बालक हैं। मैं ने तुम्हें दूध पिलाया, अन्न न खिलाया; क्योंकि तुम उसको न खा सकते थे; बरन अब तक भी नहीं खा सकते हो'' (1 कुरिन्थियों 3:1, 2)।

एक बालक होना अच्छी बात है; किन्तु बालक बने रहना घातक है। यदि आपकी निष्पक्ष जांच से यह पता चलता है कि आप उस प्रकार बड़े नहीं हुए जैसे होना चाहिए था, तो ''प्रेम में सच्चाई से चलते हुए, सब बातों में उस में जो सिर है, अर्थात मसीह में बढ़ते जाएं'' (इफिसियों 4:15)।

रिचर्ड रोजर्स ने ध्यान दिया कि प्रेरितों 9:27 के अनुसार, बरनबास ने कहा कि यरूशलेम की कलीसिया को शाऊल को एक सदस्य के रूप में स्वीकार कर लेना चाहिए क्योंकि (1) शाऊल ने प्रभु को देखा था, (2) उसने प्रभु के साथ बात भी की थी और (3) उसने प्रभु के बारे में औरों को भी बताया था। रोजर्स ने कहा कि हमें भी ''प्रभु को देखना'' चाहिए (बाइबल अध्ययन करके), प्रभु से बात करनी चाहिए (प्रार्थना के द्वारा), और यीशु के बारे में औरों को बताना चाहिए (सुसमाचार का प्रचार करके)। रोजर्स ने इन्हें मनपरिवर्तन, संगति, और अंगीकार के गुण कहा (''द नीड ऑफ़ प्लेसिंग मैम्बरशिप इन ए लोकल चर्च,'' लब्बक, टैक्सास में सनसेट चर्च ऑफ़ क्राइस्ट में दिया गया प्रवचन)।

एक स्थानीय मण्डली में ''शामिल होना''

बाइबल इस बात को खोलकर नहीं बताती कि शाऊल ने यरूशलेम की कलीसिया की सदस्यता कैसे ली। अमेरिका में, आम तौर पर संदेश के अन्त में, ''एक निमन्त्रण'' दिया जाता है। बपतिस्मा लेने के निमन्त्रण के साथ और एक भटके हुए मसीही को वापस लौटने के निमन्त्रण के साथ, उन लोगों को भी निमन्त्रण दिया जाता है जो समाज में नए हैं ताकि वे उस मण्डली के सदस्य बनने के इच्छुक हों। परन्तु, यह ढंग मात्र आसानी के लिए है, क्योंकि ऐसा करने से कोई व्यक्ति *कभी भी* वचन को मान सकता है।

यदि आप किसी इलाके में नए हैं, तो आप केवल वहां की स्थानीय मण्डली के अगुओं को कह सकते हैं कि आप उस मण्डली का एक भाग बनना चाहते हैं। कोई आप से पूछ सकता है कि क्या आप स्थानीय मण्डली का एक भाग बनना चाहते हैं।

यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि नये नियम के समय में, मसीहियों के लिए नई मण्डलियों में परिचय या प्रशंसा पत्र नहीं ले जाने पड़ते थे। पौलुस के अधिकांश पत्रों के अन्त में इस प्रकार के परिचय/प्रशस्ति पत्र मिलते हैं (उदाहरण के लिए, रोमियों 16:1, 2)। इस अभ्यास के अच्छे उपयोग के लिए, देखिए 1 कुरिन्थियों 16:3; दुरुपयोग के लिए, देखिए 2 कुरिन्थियों 3:1. यद्यपि यह बाइबल की *शर्त* नहीं है, किन्तु उत्साहित करने के लिए यह अच्छा अभ्यास हो सकता है।

नये नियम की दुनिया के नगर

''तरसुस जिस मैदान में स्थित है वह उत्तर और उत्तर पश्चिम में ऊंचे-ऊंचे पहाड़ों से घिरा हुआ है जो वर्ष में अधिकांश समय बर्फ से ढके रहते हैं। इसके आगे के क्षेत्र में इन पहाड़ों के बीच से किलिकिया के फाटक नाम के दर्रे से होकर जाना पड़ता था, क्योंकि पश्चिम से किलिकिया तक पहुंचने के लिए केवल यही एक मार्ग था। एक और पहाड़ किलिकिया को पूर्व की ओर से घेरता था, और इस में से दो और प्रसिद्ध दर्रे हैं, जिनसे होकर सीरिया में पहुंचा जाता है।''

न्यू कमैन्ट्री ऑन ऐक्ट्स
जे. डब्ल्यू मैक्गार्वे

''[दमिश्क] पहाड़ियों से घिरा हुआ था जिसके मीलों तक फैले क्षेत्र में झरने और नहरें बहती थीं जिनमें जलविहार और व्यापारिक नौकाएं चलती थीं, इसका एक किनारा मरुस्थल से लगता था। इसके दुकानों, बाज़ारों और चौकों में रेशम, अत्यन्त मूल्यवान वस्तुएं, हाथी दांत, कालीन व तलवारें आदि मिलती थीं; प्यासे यात्री लबानोन की पहाड़ियों की बर्फ से ठण्डे किए हुए नींबू के रस से अपनी प्यास बुझाते थे। इसकी दीवारों में व्यापक द्वार लगे हुए थे, और इन में से किसी एक अर्थात पूर्वीद्वार से होकर शाऊल को जाना था।''

स्प्रैडिंग द गॉस्पल
बरनार्ड आर. यंगमैन

''[दमिश्क] विस्तृत व्यापारिक नेटवर्क का केन्द्र था जिसका व्यवसाय उत्तरी सीरिया, मैसोपोटामिया, अंटोलिया, फारस और अरब तक दूर-दूर तक फैला हुआ था। यदि मसीहियत का नया 'मार्ग' दमिश्क में फैल जाता, तो शीघ्र ही इसने इन सभी स्थानों में पहुंच जाना था। महासभा और मुख्य सताने वाले शाऊल के दृष्टिकोण से इसे दमिश्क में ही रोका जाना आवश्यक था।''

द NIV स्टडी बाइबल

''कैसरिया को हेरोदेस महान ने फीनीके के एक मुख्य स्थान पर बनाया था।... इसमें एक भव्य कृत्रिम बन्दरगाह थी, जो हेरोदेस के राज्य की प्रमुख बन्दरगाह बन गई थी। उसने इस नये नगर को ... कैसर अगस्तुस के सम्मान में कैसरिया नाम दिया। 6ई. के बाद यह यहूदिया के रोमी राज्यपालों का निवास स्थान बन गया, जिन्होंने हेरोदेस के किले में

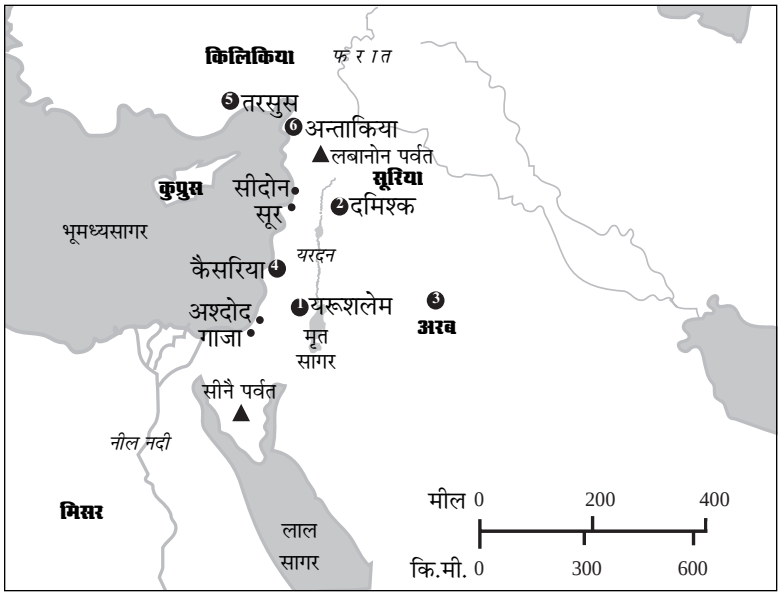

शाऊल की आरम्भिक यात्राएं

1. मसीहियों को ''धमकाने और घात करने'' शाऊल यरूशलेम ❶ से दमिश्क ❷ के लिए रवाना हुआ (9:1; 22:5; 26:12)।

2. दमिश्क के मार्ग में यीशु से मिलकर, शाऊल नगर में प्रवेश करता है और हनन्याह ❷ द्वारा उसे बपतिस्मा लेने के लिए कहा जाता है। तुरन्त ही वह प्रचार करना आरम्भ कर देता है (9:20-22)।

3. शाऊल अरब ❸ को चला जाता है (गलतियों 1:17) और बाद में दमिश्क ❷ में लौटता है। यहूदियों के क्रोध से बचने के लिए, वह रात को एक टोकरी में बैठकर नगर से निकल जाता है (प्रेरितों 9:23-3 5) फिर यरूशलेम ❶ में जाता है। वहां बरनबास उसे ग्रहण करता है और उसकी मुलाकात पतरस और याकूब से होती है (प्रेरितों 9:26-28; गलतियों 1:18, 19)।

4. यहूदियों से दोबारा धमकी मिलने पर, शाऊल/पौलुस को भाइयों द्वारा कैसरिया ❹ में लाया जाता है और उसके गृहनगर तरसुस ❺ में भेजा जाता है (9:29, 30)।

5. लगभग सात वर्ष वहां रहकर, पौलुस किलिकिया और सूरिया में प्रचार करता है (गलतियों 1:21) बरनबास शाऊल को तरसुस ❺ से अन्ताकिया ❻ में लाता है जहां उसने और शाऊल ने एक साल तक काम किया (प्रेरितों 9:19-25)।

पादटिप्पणियां

[1]ये दोनों पद ''बालक'' शब्द का प्रयोग अपमानजनक तरीके से करते हैं क्योंकि जिनको सम्बोधित किया जा रहा है वे मसीहियों के रूप में नहीं *बढ़े* थे। एक बालक के रूप में *आरम्भ करने* में कोई बुराई नहीं है परन्तु जीवन भर बालक *बने रहने* में बहुत बुराई है। [2]पिछले पाठ की तरह, मैं पुन: दोनों नामों अर्थात शाऊल *और* पौलुस का प्रयोग करूंगा: [3]मैं मसीह के चेलों को कभी-कभी ''मसीही'' कह कर सम्बोधित करूंगा, यद्यपि वह पदनाम 11:26 तक नहीं मिलता। [4]उद्धार पाया हुआ हर एक व्यक्ति इस कलीसिया में मिलाया जाता है (2:41, 47 पर ''प्रेरितों के काम, भाग-1'' में नोट्स देखिए)। [5]कुछ लोगों का विचार है 1 तीमुथियुस 3:15 में ''घर'' का अर्थ ''मन्दिर'' है, परन्तु इस संदर्भ में आयत 15 में ''घर'' (*ओइकोस* से) का अर्थ ही वही है जो 4, 5, और 12 आयतों में है। इस पूरे पद में पौलुस ने परमेश्वर के परिवार की तुलना कलीसिया के अगुओं के परिवारों से की है। [6]यदि उपयुक्त हो, तो सांसारित भौतिक परिवारों की प्रशंसा को व्यक्त करने के बारे में टिप्पणियां जोड़ी जा सकती हैं। [7]बहुत से लोग आज कलीसिया को तुच्छ जानते हैं, इसलिए इस प्वाइंट को आवश्यकता के अनुसार विस्तृत किया जा सकता है। [8]पुन:, 2:41, 47 पर नोट्स देखिए। [9]मैं मान लेता हूं कि यदि भाइयों में कोई संदेह होता तो हनन्याह उसे शांत कर सकता था। [10]यह वह शब्द है जिसका अनुवाद मत्ती 19:5 में ''के साथ'' हुआ है। शब्द के अन्य उपयोगों के लिए, देखिए लूका 15:15; प्रेरितों 5:13; 10:28।

[11]पदनाम ''सदस्य'' रोमियों 12 और 1 कुरिन्थियों 12 से निकला है, जहां निजी मसीहियों की तुलना शारीरिक देह के अंगों अर्थात पैर, हाथ, आंख, कान, इत्यादि से की गई है। किसी स्थानीय कलीसिया का ''सदस्य'' होने का यह अर्थ नहीं कि ''किसी का नाम हाज़री के लिए लिखा गया है,'' बल्कि इसलिए कि कोई उस मण्डली का *सक्रिय सदस्य* है। किसी मण्डली की ''सदस्यता लेने'' का अर्थ उस मण्डली में *काम करने के लिए जाने* की इच्छा व्यक्त करना है। [12]कभी-कभी किसी का बपतिस्मा घर से दूर ही हो जाता है और वह उस मण्डली का भाग बनने की योजना बनाता है जहां वह रह रहा होता है। [13]अगले एक भाग में 20:28 पर नोट्स देखिए। [14]एक मण्डली को वचन के अनुसार होने के लिए प्राचीनों का होना अनिवार्य नहीं, लेकिन जितनी जल्दी सम्भव हो हर एक मण्डली को योग्य पुरुषों के चयन के लिए आगे कदम बढ़ाना चाहिए (तीतुस 1:5)। यदि किसी मण्डली में प्राचीन न भी हों, तो भी हमें किसी के प्रति *जवाबदेह* होना आवश्यक है। एक स्थानीय मण्डली का भाग होना ज़िम्मेदारी की उस भावना को प्रदान करने में सहायक हो सकता है। [15]पुन:, 20:28 पर नोट्स देखिए। [16]हमारे सामने एक कठिनाई है जो शाऊल को नहीं थी। शाऊल के दिनों में किसी साम्प्रदायिक का अस्तित्व नहीं था; परन्तु आज बहुत सी अर्थात साम्प्रदायिक कलीसियाओं का अस्तित्व है, सो हमें पहले यह सुनिश्चित करना आवश्यक है कि जिस मण्डली में हम ''स्वयं को शामिल करते'' हैं क्या वह परमेश्वर के वचन के सिद्धांतों से जुड़ी हुई है? [17]इस पाठ के अन्त में ''स्थानीय मण्डली में शामिल होना'' पर अतिरिक्त लेख देखिए। [18]यह दिखाता है कि किसी के लिए स्थानीय मण्डली की संगति में स्वत: स्वीकार किया जाना अनिवार्य नहीं। तथापि, जब तक ऐसा करने की कोई मजबूरी न हो, साधारणतया जो लोग वचन के अनुसार बपतिस्मा पाते हैं (और इस प्रकार प्रभु की कलीसिया में मिलाए जाते हैं), उन्हें स्वीकार कर लिया जाता है। [19]वे उसकी आंख की तकलीफ़ इतनी जल्दी ठीक हुई देखकर तो हैरान हुए होंगे, परन्तु उसे देखकर चकित नहीं। वह दमिश्क के आराधनालयों में आकर रहता था (9:2)। [20]वास्तव में, प्रेरितों के काम की पुस्तक में यह वाक्यांश यहां ही मिलता है, यद्यपि पौलुस ने शब्द का आंशिक तौर पर ही इस्तेमाल 13:33 में किया।

[21]कहने की बात नहीं कि ''परमेश्वर का पुत्र'' शब्द मसीह के दर्शन के सम्बन्ध में प्रयुक्त होते थे, परन्तु यीशु ने ऐसे दर्शन दिया जैसे कोई *स्वर्ग* से बोल रहा हो, अर्थात, परमेश्वर की उपस्थिति के रूप में! [22]पौलुस ने अपनी पत्रियों में इस शब्द का तौर पर ही इस्तेमाल लगभग 15 बार किया। [23]पौलुस के इन तर्कों के उदाहरणों के लिए देखिए प्रेरितों 13:6-14; 17:1-3, 10. [24]तु. 6:9. [25]यदि स्थान एक आराधनालय ही था तो वह पहले आराधनालय में गया, और साधारणत: ऐसा ही होता था। एक अपवाद के लिए, प्रेरितों 16 में फिलिप्पी में पौलुस का काम देखिए। [26]कहीं पर शाऊल को पवित्र आत्मा का बपतिस्मा (या इसके

समान) मिला, जिसने उसे ''एक वास्तविक प्रेरित के लक्षण'' दिए, जिसमें ''चिह्न, और अद्‌भुत काम, और सामर्थ के काम'' शामिल थे (2 कुरिन्थियों 12:12), जिससे उसे मसीही लोगों पर हाथ रखने और उन्हें आश्चर्यकर्म करने के दान देने की योग्यता मिली (प्रेरितों 19:1-7)। लूका ने यह नहीं कहा कि शाऊल को पवित्र आत्मा का बपतिस्मा (या इसके समान) *कब* मिला, प्रेरितों 9 की घटनाओं के समय या उसके बाद। शाऊल ने सम्भवत: दमिश्क के आराधनालय में ''यहूदियों को हक्के-बक्के करते हुए'' आत्मा की प्रेरणा से बात की, परन्तु यह हम निश्चित तौर पर नहीं जानते।[27]निश्चित ही एक घटक यह है कि वह आत्मा के नियन्त्रण में था।[28]गलतियों 1:11-24 में, पौलुस ने उस समय की बात की जब वह मसीही बना। प्रेरितों 9 में ज्ञान को बढ़ाने के लिए इस पाठ में उन आयतों का इस्तेमाल किया जाएगा।[29]पृष्ठ 126 पर मानचित्र देखिए।[30]गलतियों 1:17ख। यह आयत किसी भी अन्य जगह की तरह 9:22 और 9:23 के बीच फिट बैठती है।

[31]इनमें से कई ध्यान में रखते हैं कि सीनै पर्वत अरब के दूर दक्षिणी भाग में था (गलतियों 4:25) और सुझाव देते हैं कि शाऊल ने मूसा और एलिय्याह की तरह सीनै की आध्यात्मिक यात्रा की, परन्तु इस प्रकार की यात्रा का हमारे पास कोई प्रमाण नहीं है।[32]यीशु द्वारा प्रभु भोज की स्थापना का पौलुस का वृत्तांत सुसमाचार के वृत्तांतों में से किसी के द्वारा भी इस घटना के दर्ज करने से *पहले* लिखा गया।[33]इसलिए, वह किसी भी प्रकार से किसी अन्य प्रेरित से कम नहीं था (2 कुरिन्थियों 12:11)।[34]यूहन्ना 1:42.